Exchange & Finance Available
Zelo Electric Scooter
Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

Periodicity- Weekly

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

20 मई 2026

वर्ष - 04, अंक - 03 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 1,51,905 Silver 2,95,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

साबुन, शैंपू से लेकर टूथपेस्ट भी होंगे महंगे, पाम और सोयाबीन तेल का बायोफ्यूल में इस्तेमाल, बढ़ रहे जरूरी उत्पादों के दाम

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया संकट के कारण दुनिया के 40 से अधिक देश वाहनों के ईंधन के लिए बायोफ्यूल पर शिफ्ट हो रहे हैं और इसका नतीजा यह हो रहा है कि वैश्विक स्तर पर खाद्य तेल की कीमतें बढ़ती जा रही हैं। पाम ऑयल से लेकर सोयाबीन तेल के वैश्विक दाम लगातार मजबूत हो रहे हैं । पाम ऑयल का इस्तेमाल साबुन, शैंपू, टूथपेस्ट जैसे आइटम के उत्पादन में किया जाता है। पाम के महंगा होने से इनकी कीमत भी कंपनियां बढ़ा चुकी है या बढ़ाने वाली है। अमेरिका, कनाडा, ब्राजील, इंडोनेशिया, मलेशिया, भारत, चीन जैसे सभी प्रमुख देश वैकल्पिक ईंधन के रूप में बायोफ्यूल को तेजी से अपना रहे हैं या इस पर काम करना शुरू कर दिया है।

इंडोनेशिया ने बंद किया पाम ऑयल का निर्यात - इंडोनेशिया ने पाम ऑयल का निर्यात बंद कर दिया है ताकि वहां पाम ऑयल का इस्तेमाल बायोफ्यूल के लिए किया जा सके। ब्राजील सोयाबीन से बायोफ्यूल बना रहा है। वैश्विक स्तर

पर सोयाबीन के उत्पादन में ब्राजील की हिस्सेदारी 40 प्रतिशत है। सूरजमुखी के तेल का इस्तेमाल भी बायोफ्यूल के रूप में किया जा रहा है। यूरोप से मुख्य रूप से सूरजमुखी तेल का आयात भारत करता है।

भारत अपनी खाद्य तेल की जरूरत का 60 प्रतिशत से अधिक आयात करता है। मुख्य रूप से पाम ऑयल का आयात किया जाता है। पाम और सोयाबीन की कमी होने से इन दोनों खाद्य तेल की कीमत घरेलू स्तर पर पिछले ढाई महीनों में 20 प्रतिशत से अधिक बढ़ चुकी है। इसका असर सरसों तेल पर भी देखा जा रहा है।

सरसों तेल की कीमत 170-200 रुपए प्रति लीटर - बाजार में सरसों तेल की कीमत 170-200 रुपए प्रति लीटर पहुंच चुकी है जबकि एक साल पहले इसकी कीमत 120-150 रुपए प्रति लीटर थी। सूरजमुखी तेल की कीमत 160-190 रुपए प्रति लीटर, सोयाबीन तेल की कीमत 130-150 रुपए प्रति लीटर, मूंगफली तेल की कीमत 180-200 रुपए प्रति लीटर तो पाम तेल की कीमत 145-165 रुपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी हो चुकी है।

पिछले साल की समान अवधि की तुलना में सभी तेल के खुदरा भाव में 30 प्रतिशत से अधिक का इजाफा है। दूसरी तरफ, अमेरिका में काटन का उत्पादन कम होने के कारण वैश्विक स्तर पर कॉटन की कमी बताई जा रही है जिससे कॉटन के दाम में भी तेजी दिख रहे हैं। पश्चिम एशिया संकट के कारण वैश्विक स्तर पर गेहूं की किल्लत भी बताई जा रही है। हालांकि घरेलू स्तर पर गेहूं की कोई कमी नहीं है। जिंस विशेषज्ञों का कहना है कि अल नीनो की वजह से भी विभिन्न जिंसों के उत्पादन पर असर दिख सकता है। यही वजह है कि भारत ने चीनी के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया है।

खाद्य तेल उद्योग उत्पादन बढ़ाए, खेती के आधुनिक तरीके अपनाए: एसईए - खाद्य तेल के उद्योग निकाय एसईए ने तिलहनों का घरेलू उत्पादन बढ़ाने, खेती के आधुनिक तरीके अपनाने और सोच-समझकर उपभोग करने की आदतें बनाने की जरूरत पर जोर दिया है। अपने सदस्यों को लिखे एक पत्र में साल्वेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एसईए) के प्रेसिडेंट संजीव अस्थाना ने खाद्य तेल के बढ़ते आयात खर्च पर चिंता जताई। उन्होंने पश्चिम एशिया संकट के कारण पैदा हुई रुकावटों से निपटने के लिए नीतिगत समर्थन की भी मांग की। भारत ने अक्टूबर में समाप्त हुए विपणन वर्ष 2024-25 के दौरान लगभग 1.61 लाख करोड़ रुपये का 1.6 करोड़ टन खाद्य तेल आयात किया। फसल वर्ष 2025-26 (जुलाई-जून) में भारत का घरेलू तिलहन उत्पादन 409.98 लाख टन होने का अनुमान है।

अतिक्रमण पर चला बुलडोजर: बस स्टैंड नाले पर बनी पक्की दीवार और गुमटियां हटाईं

नीमच । नगर पालिका ने सोमवार शाम शहर के विभिन्न क्षेत्रों में अतिक्रमण विरोधी अभियान चलाया। इस दौरान बस स्टैंड स्थित नाले पर किए गए पक्की दीवार के निर्माण और अवैध गुमटियों को जेसीबी से हटाया गया। तहसीलदार अजेंद्रनाथ प्रजापत और नपा सीएमओ दुर्गा बामनिया के नेतृत्व कार्रवाई की गई।

नाले के अंदर अवैध निर्माण पर चली जेसीबी - बस स्टैंड नाले पर अतिक्रमणकारियों ने नाले के भीतर ही पक्की दीवार खड़ी कर ली थी और उसके ऊपर गुमटियां रख दी थीं। अधिकारियों ने बताया कि इन कब्जाधारियों को पहले भी कई बार नोटिस दिए गए थे, लेकिन निर्माण नहीं हटाया गया। सोमवार को प्रशासनिक अमले ने दो गुमटियों सहित नाले की पक्की दीवार को पूरी तरह तोड़ दिया।

अंबेडकर रोड से हटाया जूस दुकानों का कब्जा - टीम ने अंबेडकर रोड स्थित साईं मंदिर के सामने भी कार्रवाई की। यहां जूस की दुकानों द्वारा सड़क पर काफी आगे तक अतिक्रमण किया गया था, जिससे यातायात बाधित हो रहा था। अधिकारियों ने मौके पर ही ठेलों को सड़क से पीछे हटवाया और दुकानदारों को भविष्य में अतिक्रमण करने पर कड़ी कार्रवाई की चेतावनी दी।

कार में 1.784 किलो अफीम मिली, आरोपी को पकड़ा

नीमच । जिले की नयागांव पुलिस ने एक मारुति स्विफ्ट कार से करीब पौने दो किलो अफीम पकड़ी। साथ ही 17 मई एक आरोपी को गिरफ्तार किया। जानकारी के अनुसार, पुलिस को खबर मिली थी कि एक कार से अफीम की तस्करी होने वाली है। इस सूचना पर रविवार दोपहर जावद-नयागांव रोड स्थित ढाबा माता मंदिर पुलिया के पास नाकाबंदी की गई। तभी एक संदिग्ध स्विफ्ट कार (RJ-09-CC-3584) आती दिखी, जिसे रोककर जब तलाशी ली गई, तो पुलिस के होश उड़ गए। कार के अंदर से 1 किलो 784 ग्राम अवैध अफीम मिली।

नीमच सिटी का रहने वाला है आरोपी - कार चला रहे शख्स की पहचान सुरेश मालवीय (36) के रूप में हुई है, जो नीमच सिटी के ग्राम चडौली का रहने वाला है। पुलिस ने अफीम जब्त कर सुरेश को तुरंत हिरासत में ले लिया।

पेट्रोल में 30% एथनोल ब्लेंडिंग का रास्ता साफ, सरकार ने जारी किए मानक नियम

नई दिल्ली। निर्धारित समय से काफी पहले पूरे देश में 20 मिश्रित पेट्रोल (ई-20) की बिक्री का लक्ष्य हासिल करने के बाद सरकार अब 30 फीसद एथनोल मिश्रित ईंधन की तरफ बढ़ती दिख रही है। सरकारी एजेंसी भारतीय मानक ब्यूरो (बीआइएस) ने पेट्रोल में उच्च स्तर के इथेनॉल ब्लेंडिंग के लिए नए ईंधन मानक जारी कर दिए हैं।

इनमें ई-22, ई-25, ई-27 और ई-30 (यानी 22 से 30 प्रतिशत तक एथनोल मिश्रण) ईंधन के मानक तय किये गये हैं। बीआइएस ने उक्त मिश्रण वाले ईंधन की तकनीकी विशिष्टताएं, सैंपलिंग और टेस्टिंग के तरीके निर्धारित किए हैं। इससे पेट्रोल पंपों पर इन ईंधनों को स्पष्ट रूप से लेबल किया जाएगा, जैसे "ई-22 पेट्रोल'', "ई-25 पेट्रोल'' आदि।

भारत को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

विशेषज्ञ मान रहे हैं कि यह कदम भारत को ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। वैसे यह स्पष्ट कर दें कि अभी सरकार ने राष्ट्रव्यापी तौर पर ई-20 ईंधन की बिक्री को अनिवार्य नहीं किया है। सरकार की तरफ से देश में एथनोल मिश्रण ईंधन की बक्री को पश्चिम एशिया में चल रहे विवाद और वैश्विक ऊर्जा संकट के बीच और तेजी दी जा रही है।

भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा कच्चे तेल का आयातक है

और अपनी जरूरत का करीब 90 फीसद तेल आयात करता है। पिछले वित्त वर्ष के दौरान कच्चे तेल का आयात बिल करीब 123 अरब डॉलर रहा, जबकि पश्चिम एशिया संकट से कीमतें बढ़ने का खतरा बना हुआ है।

2014 से अब तक 1.44 लाख करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा बचत - भारतीय रुपये में गिरावट होने, महंगाई की रफ्तार बढ़ने के लिए इसे जिम्मेदार माना जा रहा है। जबकि ई-20 मिश्रित ईंधन की बिक्री करने से 2014 से अब तक देश को लगभग 1.44 लाख करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा बचत हुई है। करीब 245 लाख मैट्रिक टन कच्चे तेल के आयात में कमी आई है। यही वजह है कि सरकार इसे और बढ़ावा देने में जुटी है।

हम ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो सकते हैं- एथनोल से जुड़े विषय पर देश के प्रसिद्ध विशेषज्ञ व टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के वीपी व प्रमुख (भारत) विक्रम गुलाटी ने इस विकास का स्वागत किया है। उन्होंने कहा, "पेट्रोल में 20 फीसद एथनोल मिश्रण में जितनी तेजी से हमने सफलता हासिल की है उससे यह उम्मीद बनती है हम ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो सकते हैं। बीआइएस की तरफ से ई-30 की बिक्री शुरु हो जाने के बाद आत्मनिर्भर होने की तरफ और तेजी से बढ़ा जाएगा।''

ब्राजील में ई-27 फॉर्मूला लागू है- उन्होंने ब्राजील का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां ई-27 फॉर्मूला लागू है लेकिन औसतन 50-55 फीसद एथनोल मिश्रित पेट्रोल की बिक्री हो रही है। ब्राजील में 95 फीसद तक वाहन ऐसे बने हैं कि वे 100 फीसद एथनोल से चल सकते हैं। "भारत को भी इस बारे में सोचना चाहिए। इसके लिए हम ब्राजील सरकार की तरह ही एथनोल मिश्रित ईंधन को सामान्य पेट्रोल से सस्ती करने की व्यवस्था करनी चाहिए।'

'वहां मिश्रित पेट्रोल 30 फीसद तक सस्ती होती है। वहां मिश्रित ईंधन पर चलने वाले वाहनों को सरकार की तरफ से टैक्स में छूट मिला हुआ है। हमें यह सोचना चाहिए कि एथनोल पर्यावरण की रक्षा भी कर रहा है, किसानों की मदद कर रहा है, एक नया उद्योग स्थापित कर रहा है, विदेशी मुद्रा की बचत करा रहा है।''

जिले के सभी स्कूलों और आंगनवाड़ी केंद्रों में एक माह में नल कनेक्शन उपलब्ध कराएं - कलेक्टर हिमांशु चंद्रा

जल एवं स्वच्छता मिशन समीक्षा बैठक में दिए निर्देश, हर बसाहट तक पहुंचे 'हर घर नल से जल' योजना

नीमच। कलेक्टर हिमांशु चंद्रा ने जल निगम को निर्देश दिए हैं कि जिले के सभी शेष स्कूलों एवं आंगनवाड़ी केंद्रों में 'हर घर नल से जल' योजना के तहत एक माह के भीतर नल कनेक्शन उपलब्ध कराना सुनिश्चित किया जाए। कोई भी स्कूल, आंगनवाड़ी केंद्र या बसाहट योजना के लाभ से वंचित नहीं रहना चाहिए।

सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित जिला स्तरीय जल एवं स्वच्छता मिशन की समीक्षा बैठक में जिला पंचायत सीईओ अमन वैष्णव, जल निगम महाप्रबंधक धीरेन्द्र बिजोरिया, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कार्यपालन यंत्री दीपेश वास्पत सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी एवं समिति सदस्य उपस्थित रहे।

बैठक में बताया गया कि जिले के 377 स्कूलों एवं 149 आंगनवाड़ी भवनों में अभी नल कनेक्शन होना शेष है। इन स्थानों पर

कार्य लगातार जारी है। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि एक माह के भीतर सभी शेष स्कूलों और आंगनवाड़ी केंद्रों में नल कनेक्शन उपलब्ध करा दिए जाएं।

कलेक्टर ने गांधी सागर समूह जल प्रदाय योजना से वंचित मजरे, टोले एवं बसाहटों की सूची तैयार कर वहां हर घर नल कनेक्शन के लिए प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश भी दिए। साथ ही रोड रेस्टोरेशन कार्यों की ग्रामवार सूची उपलब्ध कराने और पंचायतों से गुणवत्ता का सत्यापन कराने के निर्देश दिए गए।

बैठक में प्रत्येक ग्राम पंचायत में वाल्वमेन एवं पंप ऑपरेटर चयनित कर उन्हें योजना संचालन का प्रशिक्षण देने पर भी जोर दिया गया। अधिकारियों ने जानकारी दी कि जिले में हाल ही में 18 नवीन नलकूप स्वीकृत किए गए हैं, जिन पर कार्य शुरू हो चुका है। आगामी दिनों में 18 और नलकूप खनन किए जाएंगे।

कलेक्टर ने बंद पड़े नलकूपों में रिचार्ज पिट संरचनाएं बनाने तथा जलकर संग्रहण बढ़ाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने जनपद सीईओ को एक माह में जलकर संग्रहण 5 लाख रुपए से बढ़ाकर 10 लाख रुपए तक पहुंचाने के लिए नियमित समीक्षा करने को कहा।

जातिगत जनगणना को सुप्रीम कोर्ट से हरी झंडी: शीर्ष अदालत ने PIL पर विचार करने से किया इनकार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को केंद्र सरकार के जाति आधारित जनगणना कराने के फैसले को चुनौती देने वाली जनहित याचिका खारिज कर दी और कहा कि यह मुद्दा नीतिगत दायरे में आता है।

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सरकार को कल्याणकारी उपाय तैयार करने के लिए पिछड़ी जातियों से संबंधित व्यक्तियों की संख्या जानना आवश्यक है। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जायमाल्य बागची और विपुल पंचोली की पीठ ने जनहित याचिकाकर्ता सुधाकर गुम्मुला की इस दलील से असहमति जताई कि सरकार के पास जातिगत विवरणों से संबंधित पर्याप्त जानकारी और आंकड़े उपलब्ध हैं। सुधाकर स्वयं अपनी दलीलें पेश करने के लिए उपस्थित हुए थे। मुख्य न्यायाधीश ने जनहित याचिका खारिज करते हुए कहा, "जनगणना जाति आधारित होनी चाहिए या नहीं, ये सभी नीतिगत मामले हैं। इसमें गलत क्या है। सरकार को यह जानना आवश्यक है कि पिछड़े वर्ग में कितने लोग हैं, उनके लिए किस प्रकार के कल्याणकारी उपाय किए जाने चाहिए। यह नीतिगत दायरे में आता है।'' 2027 की जनगणना, जिसे आधिकारिक तौर पर 16वीं राष्ट्रीय जनगणना कहा जाएगा, 1931 के बाद पहली बार व्यापक जाति गणना को शामिल करने वाली जनगणना होगी और देश की पहली पूरी तरह से डिजिटल जनगणना होगी।

भीषण सड़क हादसा: ट्रक ड्राइवर गंभीर घायल ब्रेकर बना हादसे की वजह, उदयपुर रेफर

नीमच। जिले के समीप नयागांव हाईवे पर देर रात एक भीषण सड़क हादसा हो गया। जानकारी के अनुसार एक ट्राला आगे चल रहे ट्राले के अचानक ब्रेक लगाने से अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गया। हादसे में ट्रक चालक गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल चालक की पहचान भीलवाड़ा निवासी मदनलाल गुर्जर के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलते ही नयागांव चौकी पुलिस और नयागांव टोल एंबुलेंस मौके पर पहुंची। घायल चालक को तत्काल उपचार के लिए जिला अस्पताल लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसकी गंभीर हालत को देखते हुए उदयपुर रेफर किया गया । प्राथमिक जानकारी के अनुसार नीमच-नयागांव हाईवे पर तुलसी होटल के सामने बने स्पीड ब्रेकर के कारण हादसा हुआ। बताया जा रहा है कि आगे चल रहे ट्रक चालक ने ब्रेकर आने पर अचानक ब्रेक लगाया, जिससे पीछे आ रहा ट्राला उससे टकरा गया और अनियंत्रित होकर पलटी खा गया। घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। नयागांव चौकी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर यातायात व्यवस्था संभाली और पूरे मामले की जांच शुरू कर दी है।

धामनिया रोड़ पर दर्दनाक हादसा: गैस सिलेंडर सप्लाई करने पहुंचे युवक को अज्ञात कार ने मारी टक्कर, मौके पर मौत

नीमच। जिले के धामनिया रोड पर सोमवार को हुए दर्दनाक सड़क हादसे में गैस सिलेंडर सप्लाई करने वाले 35 वर्षीय युवक की मौत हो गई। हादसे के बाद क्षेत्र में शोक का माहौल है। पुलिस ने मामला दर्ज कर अज्ञात कार चालक की तलाश शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार पारस कुमावत पिता शंभूलाल कुमावत निवासी ग्राम बसेड़ी कुण्डाल थाना छोटी सादड़ी रोज की तरह गैस सिलेंडर सप्लाई करने के लिए वाहन लेकर धामनिया रोड क्षेत्र में पहुंचे थे। इसी दौरान वह एक ग्राहक को गैस सिलेंडर देने के लिए वाहन से नीचे उतरे। तभी तेज रफ्तार अज्ञात कार ने उन्हें जोरदार टक्कर मार दी।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टक्कर इतनी भीषण थी कि पारस गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़े और उनका एक पैर भी टूट गया। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई तथा आसपास के लोग बड़ी संख्या में एकत्रित हो गए। स्थानीय लोगों ने तुरंत एंबुलेंस एवं पुलिस को सूचना दी।

गंभीर हालत में घायल युवक को जिला

चिकित्सालय नीमच पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। बताया जा रहा है कि हादसा इतना भयावह था कि युवक की मौके पर ही मौत हो चुकी थी। हादसे के बाद अज्ञात कार चालक वाहन सहित मौके से फरार हो गया। पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से वाहन की तलाश कर रही है। वहीं मृतक के परिजन शव को पोस्टमार्टम के लिए छोटी सादड़ी लेकर पहुंचे, जहां पीएम की कार्रवाई की जाएगी।

घटना के बाद परिवार सहित पूरे क्षेत्र में शोक की लहर फैल गई है। पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

Email: nmh.pawan@gmail.com
Contact: 9407423966, 8770664886

तमिलनाडु में तमिल राजनीति के उदय से उम्मीद की नई किरणें

विनोद कुमार सिंह

तमिलनाडु के इस जनादेश ने एक बार फिर यही सिद्ध किया है कि लोकतंत्र में अंतिम शक्ति जनता के हाथ में ही होती है।विगत विधान सभा के चुनाव 26 का परिणाम केवल सत्ता परिवर्तन की कहानी नहीं है।यह बदलती पीढ़ी,नई आकांक्षाओं,क्षेत्रीय स्वाभिमान और राजनीतिक पुनर्जागरण की कहानी भी है।भविष्य के आने वाले वर्षों में भारतीय राजनीति का नया अध्याय दक्षिण भारत से ही लिखा जाए।

तमिलनाडु विधान सभा चुनाव 26 के बदलते जनादेश ने तमिल द्रविड़ राजनीति से 'नई तमिल राजनीति' भारतीय लोकतंत्र को दिया नया संदेश... वैश्विक राजनीतिक पटल पर सैदव ही भारत व भारतीय लोकतंत्र की चर्चा होती रहती है।भारत में संविधान ही सर्वोपरि है।जो अपने नागरिको मौलिक अधिकारो व कर्तव्यों की स्पष्ट उल्लेख किया है। यहाँ के नागरिकों को मताधिकार दिया है।भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत रही है कि यहाँ जनता समय-समय पर सत्ता, समीकरण और राजनीतिक विचार घारों व धारणाओं को बदलती रही है।भारतीय राजनीति में कोई भी राजनीतिक दल की शक्ति स्थायी नहीं होती।कभी राष्ट्रीय राजनीतिक दलों का प्रभाव चरम पर होता है,तो कभी क्षेत्रीय अस्मिता नई राजनीतिक धारा बनकर उभरती है। विगत दिनों दक्षिण भारत का तमिलनाडु राज्य इसी राजनीतिक परिवर्तन का सबसे बड़ा उदाहरण रहा है।सर्वविदित रहे कि सन 1967 में जब सी एन अन्ना दुरई के नेतृत्व में द्रविड़ राजनीति ने कांग्रेस के लंबे राजनीतिक वर्चस्व को समाप्त कर सत्ता के सिंघासन हासिल की थी,तब शायद किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि आने वाले दशकों में तमिलनाडु भारतीय राजनीति की सबसे प्रभावशाली राजनीतिक प्रयोगशाला बन जाएगा।उस दौर में द्रविड़ आंदोलन केवल चुनाव जीतने का माध्यम नहीं था,बल्कि सामाजिक न्याय, भाषायी अस्मिता,क्षेत्रीय स्वाभिमान और राजनीतिक आत्मसम्मान का बड़ा आंदोलन बन चुका था।तमिल समाज ने पहली बार यह महसूस किया कि दिल्ली की राजनीति से अलग उनकी अपनी भी एक राजनीतिक पहचान हो सकती है।यही वह दौर था जब राजनीति और सिनेमा ने मिलकर दक्षिण भारत में एक नई सामाजिक चेतना को जन्म दिया।तमिल फिल्मों के संवाद केवल मनोरंजन नहीं रहे,बल्कि राजनीतिक संदेश बन गए।फिल्मी के सुनहरे पर्दे पर गरीबों के रक्षक और अन्याय के विरुद्ध लड़ने वाले नायक जनता की वास्तविक राजनीति के नायक बनते चले गए।

इसी राजनीतिक-सांस्कृतिक वातावरण से एम जी रामा चन्द्रन जैसे करिश्माई नेता उभरे,जिन्होंने जनता के दिलों पर ऐसा प्रभाव स्थापित किया कि फिल्मों की लोकप्रियता सीधे राजनीतिक जनसमर्थन में बदल गई।उनके जे जयललिता ने भी उसी परंपरा को आगे बढ़ाया और तमिल राजनीति में महिला नेतृत्व की एक अलग पहचान बनाई।दक्षिण भारत में फिल्म और राजनीति का यह अनूठा संगम धीरे-धीरे आंध्र प्रदेश तक पहुँचा,जहाँ एन टी रामा राव ने तेलुगु अस्मिता को राजनीतिक शक्ति में बदल दिया।यह वह नया दौर था जब राष्ट्रीय राजनीतिक दलों के सामने क्षेत्रीय दलों की शक्ति तेजी से बढ़ रही थी।लगभग छह दशकों तक तमिलनाडु की राजनीति द्रविड़ दलों के इर्द-गिर्द धुमती रही।कभी डी एम के सत्ता में आई तो कभी ए आई ए डी एम के लेकिन राजनीतिक केंद्र वहीं बना रहा।जनता के सामने विकल्प बदलते

रहे,किन्तु राजनीति का मूल स्वर द्रविड़ विचारधारा ही बनी रही,किन्तु समय हमेशा एक जैसा नहीं रहता।राजनीति में भी पीढ़ियाँ बदलती हैं,प्राथमिकताएँ बदलती हैं और जनता की अपेक्षाएँ भी बदल जाती हैं।वर्ष 2026 का तमिलनाडु विधानसभा चुनाव इसी परिवर्तन का सबसे बड़ा संकेत बनकर सामने आया।इस चुनाव ने न केवल राजनीतिक पंडितों के सभी अनुमान उलट दिए,बल्कि यह भी साबित कर दिया कि जनता जब परिवर्तन का मन बना लेती है,तो दशकों पुरानी राजनीतिक संरचनाएँ भी हिल जाती हैं।तमिल फिल्म जगत के लोकप्रिय अभिनेता विजय के नेतृत्व में उभरी नई राजनीतिक धारा ने पहली बार तमिलनाडु की राजनीति को द्रविड़ बनाम द्रविड़ की पारंपरिक लड़ाई से बाहर निकालने का प्रयास किया।विजय ने स्वयं को केवल अभिनेता के रूप में प्रस्तुत नहीं किया,बल्कि 'नई तमिल राजनीति' के नायक के रूप में स्थापित करने की कोशिश की।उनकी सभाओं में उमड़ती युवाओं की भीड़,सोशल मीडिया पर असाधारण लोकप्रियता और पारंपरिक राजनीति के विरुद्ध आक्रोश ने चुनावी वातावरण को पूरी तरह बदल दिया।शुरूआत में राजनीतिक विश्लेषक इसे केवल 'स्टारडम का प्रभाव' मान रहे थे,लेकिन विधान सभा चुनाव के परिणामों ने यह साबित कर दिया कि तमिलनाडु की जनता बदलाव चाहती थी।तमिलनाडु विधानसभा की कुल 234 सीटों में बहुमत के लिए 118 सीटों की आवश्यकता थी।चुनाव परिणामों में विजय की पार्टी टी वी के ने 108 सीटें जीतकर सबसे बड़े राजनीतिक दल के रूप में उभरकर सबको चौंका दिया।वहीं डी ए के 59 सीटों पर सिमट गई और ए आई ए डी एम के गठबंधन लगभग 53 सीटों तक सीमित रह गया।कांग्रेस को केवल 5 सीटों से संतोष करना पड़ा।इन परिणामों ने केवल सरकार का गणित नहीं बदला,बल्कि तमिलनाडु की राजनीति की आत्मा में चल रहे परिवर्तन को भी उजागर कर दिया।यह चुनाव भावनात्मक नारों और पारंपरिक राजनीतिक विरासत से आगे बढ़कर नई आकांक्षाओं का चुनाव बन चुका था। युवाओं की नई पीढ़ी रोजगार चाहती है,तकनीकी विकास चाहती है,उद्योग चाहती है,डिजिटल अवसर चाहती है और सबसे अधिक पारदर्शी शासन चाहती है।

पहली बार मतदान करने वाले लाखों युवा मतदाताओं ने जातीय और परंपरागत राजनीतिक निष्ठाओं से ऊपर उठकर 'नए नेतृत्व' पर भरोसा जताया।यही कारण रहा कि शहरी क्षेत्रों,आईटी कॉरिडोर और शिक्षित युवाओं वाले निर्वाचन क्षेत्रों में पारंपरिक दलों को अपेक्षित समर्थन नहीं मिल पाया।राजनीतिक विश्लेषकों की सबसे बड़ी भूल यह रही कि वे तमिलनाडु की राजनीति को पुराने चुनावी गणित से समझने का प्रयास करते रहे,जबकि जनता का मन बदल चुका था।एग्जिट पोल और राजनीतिक सर्वेक्षण जहाँ द्रविड़ दलों की मजबूत वापसी का दावा कर रहे थे,वहीं मतदाताओं ने चुपचाप एक नया राजनीतिक संदेश लिख दिया।दरअसल तमिलनाडु में यह परिवर्तन अचानक नहीं आया।पिछले कुछ वर्षों से जनता के भीतर नेतृत्व को लेकर एक खालीपन महसूस किया जा रहा था।एम करुणा निधि और जयललिता जैसे बड़े नेताओं के जाने के बाद राजनीति में वह भावनात्मक करिश्मा दिखाई नहीं दे रहा था जिसने दशकों तक जनता को जोड़े रखा था।इसी राजनीतिक रिक्तता में नए चेहरे और नई राजनीति के लिए जगह बनी। विजय ने चुनाव प्रचार के दौरान बार-बार 'तमिल अस्मिता' और 'नई पीढ़ी की राजनीति' को केंद्र में रखा।उन्होंने पारंपरिक द्रविड़ राजनीति से दूरी बनाते हुए स्वयं को भविष्य की राजनीति का चेहरा साबित करने का प्रयास किया।इस चुनाव का सबसे बड़ा झटका भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेश को लगा। कभी दक्षिण भारत में मजबूत राजनीतिक आधार रखने वाली कांग्रेस अब गठबंधन की राजनीति तक सीमित दिखाई दे रही है। तमिलनाडु के परिणामों ने यह स्पष्ट कर दिया कि केवल क्षेत्रीय दलों के सहारे राजनीति करने से किसी राष्ट्रीय दल का जनाधार मजबूत नहीं हो सकता।कांग्रेस के सामने सबसे बड़ा संकट स्थानीय नेतृत्व का अभाव है।पार्टी के पास ऐसा कोई करिश्माई चेहरा नहीं दिखता जो तमिलनाडु की जनता के भीतर नई ऊर्जा पैदा कर सके।यही कारण है कि चुनाव परिणामों के बाद कांग्रेस के भीतर संगठनात्मक पुनर्गठन और दक्षिण भारत की नई रणनीति पर गंभीर चर्चा प्रारम्भ हो गई है।राजनीतिक दृष्टि से देखें तो तमिलनाडु का यह जनादेश केवल एक राज्य की घटना नहीं है।यह भारतीय राजनीति में बदलती सामाजिक मानसिकता का संकेत है।आने वाले समय में क्षेत्रीय पहचान,युवा नेतृत्व,डिजिटल राजनीति और सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रभाव और अधिक बढ़ सकता है।राजनीति के विशेषज्ञों का मानना है कि भविष्य की राजनीति अब केवल जातीय समीकरणों और पारंपरिक वोट बैंक के सहारे नहीं चलेगी।सोशल मीडिया,युवा मतदाता और राजनीतिक पारदर्शिता नए निर्णायक कारक बन चुके हैं। तमिलनाडु ने यह संदेश पूरे देश को दे दिया है।दिलचस्प बात यह भी रही कि इस चुनाव में जनता ने 'स्थिरता बनाम परिवर्तन' के बीच परिवर्तन को प्राथमिकता दी।यह लोकतंत्र की सबसे बड़ी खूबसूरती है कि जनता जब बदलाव चाहती है,तो सबसे मजबूत राजनीतिक किले भी ढह जाते हैं।तमिलनाडु ने एक बार फिर भारतीय राजनीति को नई दिशा देने का काम किया है।कभी इसी राज्य ने कांग्रेस के प्रभुत्व को चुनौती दी थी,फिर द्रविड़ राजनीति को राष्ट्रीय विमर्श बनाया और अब 'नई तमिल राजनीति' की चर्चा शुरू कर दी है।आज पूरा देश तमिलनाडु के राजनीतिक घटना क्रम को इसलिए ध्यान से देख रहा है क्योंकि वहाँ से उठी राजनीतिक लहर आने वाले समय में राष्ट्रीय राजनीति की दिशा भी बदल सकती है।तमिलनाडु विधान सभा चुनाव 26 के बदलते जनादेश ने तमिल द्रविड़ राजनीति से ह्लनई तमिल राजनीतिह्व भारतीय लोकतंत्र को दिया नया संदेश।दरअसल लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति जनता जनार्दन का मौन निर्णय होता है।राजनीतिक पंडित अक्सर आँकड़ों में उलझ जाते हैं,लेकिन जनता अपने मन का फैसला चुपचाप करती है।तमिलनाडु के इस जनादेश ने एक बार फिर यही सिद्ध किया है कि लोकतंत्र में अंतिम शक्ति जनता के हाथ में ही होती है।विगत विधान सभा के चुनाव 26 का परिणाम केवल सत्ता परिवर्तन की कहानी नहीं है।यह बदलती पीढ़ी,नई आकांक्षाओं,क्षेत्रीय स्वाभिमान और राजनीतिक पुनर्जागरण की कहानी भी है।भविष्य के आने वाले वर्षों में भारतीय राजनीति का नया अध्याय दक्षिण भारत से ही लिखा जाए।अगर यदि ऐसा होता है,तो इतिहास यह अवश्य दर्ज करेगा कि तमिलनाडु ने एक बार फिर देश को राजनीति की नई दिशा दिखाई थी।

संपादकीय

बीमार अस्पताल

गाल बजाते राजनेता और लोक कल्याणकारी होने का दावा करती सरकारों की नाक के नीचे सरकारी अस्पतालों की कैसी बदहाली है, ये किसी से नहीं छिपा है। लोकलुभावन कार्यक्रमों पर पैसा पानी की तरह बहाने वाली सरकारों व मंत्रियों की प्राथमिकताओं में, वे सरकारी अस्पताल कभी नहीं रहे हैं, जो गरीबों व साधनविहीन लोगों का अंतिम आश्रय होते हैं। कायदे से तो सरकारों को इस मुद्दे को प्राथमिकता मानते हुए तत्काल प्रभाव से अस्पतालों की दशा सुधारनी चाहिए। लेकिन विडंबना है कि हर बार न्यायालय को ही जनहित से जुड़े मुद्दों पर सख्ती दिखाकर सरकारों को कार्रवाई करने को कहा जाता है। एक बार फिर पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय के आदेश से पंजाब तथा हरियाणा सरकारों की सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के संचालकों को एक बेहद जरूरी झटका लगा है। हाईकोर्ट ने दोनों राज्यों को निर्देश दिए हैं कि प्रत्येक जिला अस्पताल में आईसीयू सुविधाओं के साथ-साथ सीटी स्कैन और एमआरआई मशीनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। निश्चित रूप से न्यायालय के इस तरह के सकारात्मक हस्तक्षेप से स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर सत्ताधीशों के वायदों और उनके क्रियान्वयन के बीच बढ़ती खाई ही उजागर होती है। वहीं अदालत की कार्यवाही के दौरान पंजाब सरकार की ओर से न्यायालय को सूचित किया गया कि राज्य के 23 जिलों में से केवल छह जिला अस्पतालों में ही एमआरआई की सुविधा उपलब्ध है। दूसरी ओर राज्य के अस्पतालों में दो हजार से अधिक जनरल मेडिकल ऑफिसरों के पद और अन्य सैकड़ों विशेषज्ञों के पद खाली पड़े हुए हैं। वहीं कई जिलों के सरकारी अस्पतालों में कार्यशील आईसीयू की कमी है। अदालत ने हरियाणा सरकार से भी गहन देखभाल व निदान सुविधाओं की कमियों को लेकर स्पष्टीकरण मांगा है। निस्संदेह, इन खामियों से फिर उजागर हुआ है कि अनेक सरकारी अस्पतालों में महंगे चिकित्सा उपकरण अक्सर बिना इस्तेमाल के या कम उपयोग में क्यों रहते हैं। वहीं दूसरी ओर विभाग के उच्च अधिकारियों द्वारा भी गरीब व जरूरतमंद मरीजों की तात्कालिक जरूरतों को अनदेखा ही किया जाता है। न्यायालय की इस बात से बिल्कुल सहमत हुआ जा सकता है कि मौजूदा दौर में सीटी स्कैन,एमआरआई और आईसीयू तक मरीजों की पहुंच विलासिता नहीं, बल्कि बुनियादी स्वास्थ्य सेवा की आवश्यकता बन गई है। जो इस बात पर भी बल देता है कि सरकारें जिला स्तरीय क्रियाशील बुनियादी ढांचा बनाने के बजाय अनिश्चित काल तक आउटसोर्सिंग या रेफरल प्रणालियों पर निर्भर नहीं रह सकती हैं। वास्तव में सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली केवल खरीद की कमी से ही नहीं, बल्कि बिना योजना के भारी-भरकम खरीद की प्रवृत्ति से भी ग्रस्त है।

चिंतन-मनन

कौन बने राजा

भगवान विष्णु के वाहन गरुड़ को पक्षियों का राजा माना गया है लेकिन वे अपने स्वामी की सेवा में इतना व्यस्त रहते थे कि उन्हें पक्षियों का हालचाल जानने का समय ही नहीं मिल पाता था। एक दिन पक्षियों ने अपनी सभा बुलाई और इस बात पर विचार-विमर्श किया कि ऐसे राजा का क्या लाभ, जो कभी हमें देखने तक नहीं आता।

सभी ने काफी सोच-विचार कर उल्लू को राजा घोषित कर दिया। उल्लू के राजतिलक की तैयारी होने लगी, तभी एक कोने में बैठे कौवे ने चिल्लाते हुए कहा कि यह फैसला हमें मंजूर नहीं है। राजा गरुड़ को भले ही हमारे पास आने का समय न मिलता हो, लेकिन जब भी मौका मिलेगा वह अवश्य आएगे। मगर उल्लू को राजा बनाने का क्या लाभ, जिसे दिन में दिखाई ही नहीं पड़ता।

वह हमारी परेशानियों को कैसे हल करेगा। वह दूसरों की बातें सुनकर फैसला करेगा जिसका परिणाम यह होगा कि चाटुकारों का बोलबाला हो जाएगा। किसी ने तर्प दिया कि उल्लू रात में देख सकते हैं इसलिए वह रात में हमारी समस्या सुलझा देंगे। कौवे ने कहा- ऐसा राजा मुझे मंजूर नहीं जो रात में आकर हमारी नींद हराम करे। फिर हम पक्षी रात में ठीक से देख नहीं पाते। हम पहचानेंगे कैसे कि उल्लू ही आया है।

इस बात का लाभ उठाकर कोई राक्षस उसकी जगह आ सकता है और हमें मारकर खा सकता है। पक्षियों ने मान लिया कि राजा ऐसा होना चाहिए, जिसे प्रजा के दुख-दर्द दिखाई तो पड़ें। अंत में गरुड़ को ही राजा बनाए रखने का फैसला किया गया।

प्रभात फेरियों का महाकुंभ संपन्न, रामधुन से गूंजा नारायणगढ़

नीमच की प्रभात फेरी बनी अनुशासन और आस्था का केंद्र, हजारों रामभक्त हुए शामिल

नीमच। सूर्यपुत्र शनिदेव जन्मोत्सव के पावन अवसर पर नारायणगढ़ में प्रभात फेरियों का भव्य महाकुंभ आयोजित किया गया। बाला कुंड बालाजी, श्रीराम मंदिर प्रभात फेरी एवं देव मंडल सुंदरकांड समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस धार्मिक आयोजन में करीब 100 स्थानों से प्रभात फेरियां और रामधुन मंडल शामिल हुए। पूरे नगर में "श्रीराम जय राम जय जय राम" के जयघोष से भक्तिमय वातावरण निर्मित हो गया।

मनीष चौधरी ने बताया कि इस महाकुंभ में मंशापूर्ण महादेव रणजीत हनुमान मंदिर प्रभात फेरी, इंदिरा नगर नीमच ने भी विशेष सहभागिता निभाई। प्रभात फेरी में शामिल श्रद्धालु धार्मिक भजनों पर झूमते, नाचते और अनुशासित रूप से आगे बढ़ते नजर आए।

नीमच की प्रभात फेरी इस आयोजन में अनुशासन और आकर्षण का केंद्र रही। पुरुष श्रद्धालु सफेद कुर्ता-पजामा, पीले जैकेट और सनातनी पगड़ी में दिखाई दिए, वहीं मातृशक्ति लाल चुनर धारण कर रामधुन में शामिल हुई। प्रभात फेरी में हिमाक्ष नामक बालक भगवान गोरखनाथ की वेशभूषा में विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। वह मोर पंख से श्रद्धालुओं को आशीर्वाद दे रहा था और भक्त उसके चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे।

नगर के विभिन्न स्थानों पर रामभक्तों का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। भीषण गर्मी को देखते हुए जगह-जगह शीतल पेयजल, शरबत एवं अन्य शीतल पदार्थों की व्यवस्था भी की गई थी। पूरा नारायणगढ़ नगर भक्तिमय रंग में रंगा नजर आया और वातावरण ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो भगवान श्रीराम वनवास पूर्ण कर अयोध्या लौटे हों।

कार्यक्रम के दौरान मंच से ओमप्रकाश बटवाल एवं महामंडलेश्वर Hariom Das ने रामधुन के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि कलयुग में राम नाम ही मानव जीवन को सरल, सहज और शांतिमय बनाने का सर्वोत्तम माध्यम है। उन्होंने कहा कि रामधुन से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है तथा समाज में सद्भाव और संस्कार मजबूत होते हैं। कार्यक्रम का संचालन पंडित घनश्याम त्रिवेदी ने किया।

समापन अवसर पर एडवोकेट अरविंद पाटीदार ने पुलिस प्रशासन, विद्युत मंडल, नगर परिषद, पत्रकार बंधुओं एवं आयोजन से जुड़े सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। महाकुंभ से लौटते समय नीमच का प्रभात फेरी मंडल हर्कीयाखाल बालाजी मंदिर पहुंचा, जहां सभी भक्तों ने सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ कर बालाजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित लक्ष्मीनारायण शर्मा का भगवा दुपट्टा पहनाकर सम्मान भी किया गया।

अफीम और डोडाचूरा तस्करी के आरोपी को 13 साल का सश्रम कारावास

नीमच। विशेष न्यायाधीश एनडीपीएस एक्ट जितेन्द्र कुमार बाजोलिया ने ट्रक में अफीम एवं डोडाचूरा की तस्करी करने वाले आरोपी नवीन पिता रमेश मराठा निवासी ग्राम पालखेड़ी, जिला चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) को दोषी करार देते हुए कठोर सजा सुनाई है। न्यायालय ने आरोपी को धारा 8/15(सी) एनडीपीएस एक्ट के तहत 13 वर्ष के सश्रम कारावास एवं 2 लाख रुपए अर्थदंड तथा धारा 8/18(सी) एनडीपीएस एक्ट के तहत 5 वर्ष के सश्रम कारावास एवं 40 हजार रुपए अर्थदंड से दंडित किया है।

अभियोजन मीडिया सेल प्रभारी एडीपीओ रितेश कुमार सोमपुरा ने बताया कि 29 जनवरी 2025 को उप नारकोटिक्स आयुक्त कार्यालय नीमच को मुखबिर से सूचना मिली थी कि एक ट्रक में अफीम और डोडाचूरा की खेप पंजाब ले जाई जा रही है। सूचना पर निवारक दल ने उदयपुर-भीलवाड़ा मार्ग स्थित गंगरार टोल नाके पर नाकाबंदी कर ट्रक को पकड़ा। तलाशी के दौरान ट्रक से 26 कट्टों में भरा करीब 523 किलो अवैध डोडाचूरा एवं केबिन में छिपाकर रखी 2 किलो 300 ग्राम अफीम बरामद की गई। कार्रवाई के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर मादक पदार्थ एवं ट्रक जब्त किया गया। प्रकरण में शासन की ओर से पैरवी विशेष लोक अभियोजक सुशील ऐरन द्वारा की गई।

जीव दया और पुण्य कर्म के बिना आत्म कल्याण का मार्ग नहीं मिलता : वैराग्य सागर महाराज

नीमच। आचार्य शांति सागर संत निलय भवन लोकार्पण समारोह के अंतर्गत दिगंबर जैन मंदिर में आयोजित धर्मसभा में वैराग्य सागर महाराज ने जीव दया, गौ सेवा और पुण्य कर्म के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीव दया और पुण्य कर्म के बिना आत्म कल्याण का मार्ग प्राप्त नहीं होता। उन्होंने कहा कि यदि सच्चे मन से गौ सेवा की जाए तो पाप कर्म दूर होते हैं और पुण्य में वृद्धि होती है। जीव दया का पुण्य फल कभी निष्फल नहीं जाता तथा गौ सेवा का फल शीघ्र प्राप्त होता है।

उन्होंने कहा कि भारत में गौ माता की जितनी दुर्दशा देखने को मिलती है, उतनी विदेशों में भी नहीं है, जो गंभीर चिंतन का विषय है। प्राचीन समय में किसान फसल कटने के बाद खेतों में उगी घास पशुओं के लिए छोड़ देते थे, लेकिन आधुनिक युग में खेतों की चारदीवारी होने से पशु अंदर नहीं जा पाते और भूख-प्यास से इधर-उधर भटकते रहते हैं। उन्होंने समाज से गौ सेवा कर पशुओं को भूख-प्यास से बचाने का आह्वान किया। वैराग्य सागर महाराज ने कहा कि जिस देश में गायों की सेवा होती है, वहां विकास तेजी से होता है। मनुष्य जीवन का कोई भरोसा नहीं है। प्रतिदिन सड़क दुर्घटनाओं और अन्य कारणों से लोगों की मृत्यु हो रही है, इसलिए मनुष्य को मृत्यु का स्मरण रखते हुए जीवनभर अच्छे पुण्य कर्म करते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि "अंत गति सो मति", अर्थात जिसकी अंतिम गति अच्छी होती है, उसका जीवन भी सफल माना जाता है। उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति धन के लालच में दूसरों का पतन करेगा तो एक दिन उसका पतन भी निश्चित है। पुण्य कर्म करने वाला ही व्यक्ति मुक्ति और अरिहंत पद को प्राप्त कर सकता है। धर्मसभा में सुप्रभ सागर महाराज ने कहा कि संसार एक भयानक जंगल के समान है, जहां हर पल मृत्यु का भय बना रहता है। मनुष्य संसार में अकेला आता है और अकेला ही जाता है, इसलिए जीवन में सदैव पुण्य और परमार्थ के कार्य करते रहना चाहिए। उन्होंने झूठ, चोरी, माया, लोभ और लालच से दूर रहने का संदेश देते हुए कहा कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है और इसका उपयोग आत्म कल्याण के लिए करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आज मनुष्य के पास मनोरंजन और सोशल मीडिया के लिए समय है, लेकिन भक्ति और तपस्या के लिए समय नहीं है। बचपन खेल में, जवानी कमाने में और बुढ़ापा बीमारी में निकल जाता है, इसलिए व्यक्ति को बचपन से ही भक्ति और साधना से जुड़ना चाहिए। दिगंबर जैन समाज अध्यक्ष विजय कुमार जैन विनायका ब्रोकर्स एवं मीडिया प्रभारी अमन विनायका ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य शांति सागर महाराज के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। मंगलाचरण श्रीमती इना अजमेरा द्वारा प्रस्तुत किया गया। मुनि श्री का पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र दान समाजजनों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन विशाल विनायका जैन ब्रोकर्स ने किया।

हेल्थ के साथ पाएं वेल्थ

आम आदमी तो किसी सरकारी हॉस्पिटल की राह देख लेता है, पर अमीर की बात ही कुछ और है, क्यों कि वह हेल्थ इंश्योरेंस के सहारे निजी अस्पतालों में इलाज करा लेता है और उस पर असर नहीं के बराबर पड़ता है।

- आज भागमभाग की जिन्दगी में लोग अपने पुराने आचार-विचार को भूल कर प्रदूषण की दुनिया में जीवन यापन कर रहे हैं। ऐसा कोई घर नहीं है, जहां कोई बीमार ना हो , लेकिन ना तो उनके पास व्यायाम का समय है ना खाने न पीने का। ऐसे में बीमारियों का लगना कौन रोक सकता है।
- लोगों में प्रतिरोधक-शक्ति का विकास हो और आदमी में बीमारी से लड़ने की शक्ति जागृत हो तो छोटी-मोटी बीमारियां आदमी के ऊपर अटैक नहीं कर पाएंगी।
- हर रोज नए आयुर्वेदिक नुस्खे बताए जा रहे हैं और उनको मार्केट में डाला जा रहा है।
- डाबर के उत्पाद बाजार में छाए है बैद्यनाथ, झंडू और भी जाने कितने ही आयुर्वेद की कम्पनी जैसे रामदेव, आसाराम, सुदर्शन महाराज, महर्षि आयुर्वेद काम कर रही हैं।

फायदेमंद नुस्खा

शुगर के मरीजों को अक्सर काफी परेशानियों का सामना करना होता है। जरा से कोई बताए कि फलां औषधि फायदेमंद है, वे या उनके परिजन तुरंत ट्राई करने में लग जाते हैं। लेकिन रिस्क भी काफी रहती है।

- आइए जानते हैं एक नुस्खे के बारे में जो शुगर के मरीजों के लिए फायदेमंद है।
- पनीर डोडा नाम की जड़ी-बूटी आपको अत्तार के दुकान पर आसानी से मिल जाएगी। आधे गिलास पानी में इसके 8-10 फल रात को पानी में भिगो दीजिये। सुबह होते ही इनको मसल के छान लें, अब जो पानी बचा है, उसको सुबह निन्हें मुंह यानी खाली पेट पी लें, एक हफ्ते में आपको लगने लगेगा कि आपका शुगर लेवल काम हो रहा है। यदि आप चाहे तो दो टाइम भी ले सकते हैं, साथ ही सुबह और शाम टहलना जारी रखें ।
- खाना ना पचने वालों के लिए भी एक उपाय है। की वह भोजन के दौरान पानी कम पीएं और खाना खाने के बाद दो घंटे बाद कम से कम एक लीटर पानी पीने की आदत डालें।
- यदि आप चाहते हैं कि आपको पथरी की शिकायत ना हो तो आपको चाहिए की खाना खाने के बाद निश्चित रूप से मूत्र विसर्जन करने की आदत डालें।

एलोविरा

आयुर्वेद की दवाइयां काफी प्रचलित हो रही हैं। आपने एलोविरा का नाम तो सुना ही होगा। यदि एलोविरा का बना कोई भी उत्पाद लें तो उसके लाभकारी परिणाम सामने आएंगे?

हर तरह से है लाभकारी

यदि आप एलोवेरा का प्रयोग शुरू करते हैं तो लाभ निश्चित है। कोई भी इसके फायदे को नकार नहीं सकता है।

- एलोविरा जेल के उपयोग से बहुत- सी असाध्य बीमारियां ठीक होती हैं।

आज आयुर्वेद का जमाना है और लोग अंग्रेजी दवाइयां खाकर ऊब चुके हैं, यही नहीं इन दवाओं के साइड इफेक्ट से लोग हमेशा डरते रहते है। यदि कोई गंभीर बीमारी है तो चेकअप वगैरह कराने में ही दम फूल जाता है।

आयुर्वेद में कहां से आया वेल्थ

बाजार में बहुत सी आयुर्वेदिक कम्पनी सक्रिय हैं, जिनके उत्पाद सिर्फ अपने सदस्यों को ही देती हैं। साथ ही उस पर इंसेंटिव भी देती है। इनको नेटवर्क से जोड़कर वे लोगों की औसत आमदनी का जरिया बना रही हैं। यदि कोई इनसे जुड़ना चाहता है तो जुड़ भी सकता है। इसका लाभ यह होता है कि इससे किसी लाइलाज बीमारी का इलाज संभव हो जाता है साथ ही दुआएं भी मिलती हैं।

- एक साइट है फॉरएवरलिविंग.कॉम इस पर जाकर इनके प्रॉडक्ट को देखा जा सकता है और किसी के माध्यम से जुड़ सकते हैं।
- यह संस्था दावा करती है कि गठिया, दमा, हृदय रोग, पाचन समस्या, किडनी समस्या, मोटापा एवं त्वचा संबंधी रोग का निदान संभव है।
- नियमित खान-पान और निश्चित व्यायाम आपके शरीर को निरोगी बना सकता है, पर समय देना आपके ऊपर है। ऐसे में आपको निर्णय लेना है कि आप धन देकर सेहतमंद रहना चाहते हैं या नियमित दिनचर्या से।
- शरीर आपका है और आप ही इसकी रखवाले हैं तो निरोगी काया रहेगी तो माया तो कमा ही सकते हैं।

खुशियों का खजाना आपके ही पास है

आइए इस बात को थोड़ा और आसान ढंग से समझते हैं। याद कीजिए कि पिछली बार कब आपने अपने शरीर और आत्मचेतना को तनावमुक्त और गैर बोझिल महसूस किया था। उस मनोदशा की विशिष्ट ऊर्जा ने आपको अपने काम में अच्छा प्रदर्शन करने, लोगों के साथ गहराई से जुड़ने, काम में खुलकर रचनात्मकता की अभिव्यक्ति करने, रेंगते हुए ट्रैफिक में मुस्कराने, जाम के खुलने का मुस्कराते हुए इंतजार करने और घर लौटकर परिवार के साथ प्यार के पलों को बांटने के लिए प्रेरित किया होगा। कल्पना कीजिए इसी खुशी की फसल अगर आप हर दिन काट सकें, तो कितना अच्छा हो? अगर आप अपना ध्यान पूरी तरह से केन्द्रित करें, तो सच्ची प्रसन्नता को हासिल करना कोई मुश्किल काम नहीं है।

मालीक्युलर बॉयोलॉजिस्ट से बौद्ध भिक्षु बने मैथ्यू रिकार्ड ने शताब्दियों पुराने बौद्ध दर्शन के बौद्धिक संदेशों को आधुनिक वैज्ञानिक शोधों के निष्कर्षों के साथ जोड़ने का सार्थक प्रयास किया है। उनकी सोच के अनुसार खुश रहना मात्र एक सुखद अहसास, एक सुंदर भाव या एक अच्छे मूड से ही संबंधित नहीं है, बल्कि ये आपका बुनियादी सुखद अस्तित्व है। यह संसार की व्याख्या करने का एक तरीका है। संसार को बदलना मुश्किल होगा, पर संसार को देखने के नजरिए को बदलना तो संभव है।

निश्चित तरीका नहीं

यह सच है कि खुशी पाने का कोई एक निश्चित तरीका या फार्मूला नहीं है। इसलिए वही तरीका या ढंग अपनाएं, जो आपके लिए उपयुक्त हो। इस संदर्भ में आपको अपने ही अंदर खुशी का खजाना खोजने का दृढ़ संकल्प लेना होगा। आपको कुछ ऐसी आदतों को अपनाना होगा, जिनका पालन शताब्दियों से प्रबुद्ध लोग करते आए हैं। इन प्रबुद्धजनों की बातों को न्यूरो-साइंटिफिक रिसर्च में भी सही पाया गया है।

ध्यान लगाएं

खुश और शांत रहने के लिए मेडिटेशन से अधिक कोई भी अन्य तरीका काम नहीं करेगा। आंखें बंदकर अपना पूरा ध्यान सांस पर केन्द्रित करें। कल्पना कीजिए कि आप अपने शरीर-रूपी मंदिर में प्रवेश कर रहे हैं। शांति की भावना को महसूस करें। प्रारंभ में इस विधि को पांच मिनट तक करें और अभ्यास होने के साथ ही समय बढ़ाती जाएं। मेडिटेशन के लिए ऐसी जगह चुनें, जहां कोई आपको बाधा न पहुंचाए।

माफ करें और भूलना सीखें

सकारात्मक सोच और दूसरों को माफ करने के जज्बे पर भरोसा रखें। क्रोध, ईर्ष्या और जलन जैसे नकारात्मक विचारों से स्वयं को मुक्त रखें, क्योंकि ऐसे विचार हमारे सुख व शांति के अहसास को छीन लेते हैं। दूसरे को माफ करना खुशियां पाने का सशक्त माध्यम है।

न दें अनुचित सुविधाएं

अक्सर लाड़-प्यार के चलते, कई माता-पिता अपने कम उम्र के बच्चों का ड्राइविंग लाइसेंस बनवा देते हैं और कई बार अपनी गन-रिवॉल्वर उनकी पहुंच के अन्दर रखते हैं। इस असावधानी के कारण आए दिन अनेक दुर्घटनाएं घटती हैं और हादसे के शिकार व्यक्तियों का स्वास्थ्य खतरे में पड़ जाता है।

- जब हम स्वयं के साथ शान्ति अनुभव नहीं करते तो हम मानसिक एवम् भावात्मक व्याधियों से ग्रस्त हो जाते है। आक्रामक एवं हिंसात्मक विचार हमारी सोच को नकारात्मक बना देते हैं तथा हमारा हृदय क्रोध, द्वेष और ईर्ष्या से भर उठता है।
- टेलीविजन तथा अन्य संस्थाओं द्वारा बच्चों - वयस्कों के लिए आयोजित रियलिटी शो एवम् अनेक प्रकार की प्रतिस्पर्धाएं अधिकांश प्रतियोगियों की मानसिकता को गलत तरीके से प्रभावित करती हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) मानव स्वास्थ्य पर शहरीकरण के प्रभावों को विशिष्ट रूप से दर्शाते हुए शहरों को एक बेहतर रहने लायक जगह बनाने पर जोर देता है।

स्वास्थ्य का रखें ख्याल

- रुपयों की इस अंधी दौड़ में भाग कर हम अपने मानसिक एवम् शारीरिक स्वास्थ्य का सत्यानाश कर रहे हैं। अपनी प्रतिभा का विकास करना अच्छी बात है, परन्तु केवल पैसे कमाने के उद्देश्य से नहीं, हम केवल निर्मल आनंद के लिए अपनी नृत्य, गायन, खेलकूद की रुचियों को विकसित क्यों नहीं करते? आधुनिक युग की चूहा दौड़ हमें एक स्वस्थ इंसान से एक बीमार पशु बना रही है ।
- हाल ही में सिंगापुर में हुए एक स्वास्थ्य सेवा सम्मलेन में विशेषज्ञों ने माना कि एशिया की स्वास्थ्य सेवाएं आधुनिक जीवनशैली की व्याधियों के बोझ तले दबी जा रही हैं।
- स्वाइन-बर्ड फ्लू और तपेदिक जैसे संक्रामक रोगों के साथ -साथ आर्थिक सम्पन्नता से जुड़ी हुई असंक्रामक

बीमारियों का भार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

- तम्बाकू एवम् धूम्रपान का व्यसन भी भारत समेत अन्य देशों में लाखों लोगों की सेहत पर सवालिया निशान लगा रहा है।
- सिगरेट एवं गुटखा निर्माताओं की आक्रामक विज्ञापन तकनीक के आगे, सारे तम्बाकू विरोधी अभियान असफल सिद्ध होते प्रतीत हो रहे हैं। ये कम्पनियां मर्दानगी, आधुनिकता और तनाव-मुक्ति के नाम पर जनता को विष बेच रही हैं और इनके विरुद्ध कोई भी कार्यवाही नहीं की जा रही है।
- तम्बाकू सेवन का सीधा सम्बन्ध श्वास एवं फेफड़े की बीमारियों से है। जैसे कि अस्थमा, तपेदिक आदि। क्या ही अच्छा होता यदि हम तम्बाकूयुक्त पानमसाला चबाने के स्थान पर लौंग, इलाइची या सौंफ जैसी गुणकारी वस्तुओं का सेवन करने की बुद्धि रखते।

हम और हमारा स्वास्थ्य

आज वक्त की मांग है कि हम अपने आसपास के वातावरण को साफ-सुथरा रखते हुए स्वयं को स्वस्थ रखें।

- स्वस्थ शरीर, स्वस्थ विचार एवं स्वस्थ बुद्धि का मूर्त रूप ही आरोग्य है। दरअसल, आरोग्य वह अवस्था है, जिसमें हम प्रकृति एवं वातावरण से सामंजस्य स्थापित करते हुए जीवन का आनंद लेते हैं।
- हम वास्तविक रूप से तभी स्वस्थ होते हैं ,जब हम स्वयं को मानसिक, भौतिक, भावात्मक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक स्तर पर स्वस्थ अनुभव करते हैं।

जीवनशैली बदलाव कर इलाज का खर्चा बचाएं

अपनी वर्तमान जीवनशैली में उचित बदलाव लाकर हम अपनी दवाइयों का खर्चा कम कर सकते हैं। केवल उचित खान-पान ही नहीं, वरन उचित विचार एवं उचित आचरण द्वारा ही हम निरोग हो सकते हैं ।

- माता-पिता और अभिभावकों को बच्चों को सही आहार और साफ-सफाई से रहने के साथ-साथ एक अच्छा इंसान बनने की भी शिक्षा देनी चाहिए।
- वसायुक्त एवं रेशाहीन आहार तथा शारीरिक श्रम का अभाव डायबिटीस, उच्च रक्तचाप एवं हृदय रोग जैसी बीमारियों के प्रमुख कारण हैं। आज के दौर के पढ़े लिखे माता-पिता भी अपने नन्हे -मुन्नों को पिज्जा और बर्गर खिलाने तथा कोकाकोला आफर करने से गुरेज नहीं करते हैं। इस प्रकार उनका स्वाद फास्ट फूड के लिए विकसित होकर, घर के पौष्टिक खाने को नकारने लगता है।
- अब तो गावों में भी कोकाकोला, चिप्स और ब्रेड का खूब प्रचलन हो गया है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम जान बूझ कर रोगों के जाल में फंसते चले जा रहे हैं ।

स्वस्थ मां की स्वस्थ संतान

किसी भी देश का स्वास्थ्य उसके बच्चों के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है और केवल स्वस्थ मां ही एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दे सकती है, परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि अधिकांश भारतीय परिवारों में महिलाओं के स्वास्थ्य को वरीयता नहीं दी जाती है।

- पत्नी एवं माता की परम्परागत भूमिका में स्त्री का कर्तव्य परिवार के अन्य सदस्यों की देखभाल करना है, न कि स्वयं अपना भारतीय समाज आज के युग में भी लिंग के आधार पर भूमिकाएं निर्धारित करने में विश्वास रखता है। - लड़कों को अविचारी और उग्रवादी बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तथा लड़कियों को शर्मीला और सहनशील बनाने का प्रयास होता है। आगे चल कर यही असमानता अपने रंग दिखाना शुरू कर देती है। - महिलाओं को जीवन पर्यंत भिन्न प्रकार के तिरस्कारों का सामना करना पड़ता है। फिर चाहे वो लिंग आधारित भ्रूण हत्या हो या दहेज न लाने के नाम पर जलाया जाना हो अथवा बलात्कार का शिकार होना हो। जो देश महिलाओं का सम्मान करना नहीं जानता, वह वास्तव में एक रोगी देश है।

बनें जिम्मेदार नागरिक

जिम्मेदार नागरिकों की हैसियत से हमें अपने रहने के स्थानों में उपवन संस्कृति को फिर से वापस लाना होगा, ताकि खुली हवा में सांस लेते हुए, हम शारीरिक व्यायाम के लाभ उठा सकें। स्कूल, कॉलेजों में खेलकूद और योगाभ्यास को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। मोटर बाइक और कार के स्थान पर युवक -युवतियों में साइकिल चलाना एक आधुनिक फैशन के रूप में विकसित करना होगा ।

टीकाकरण और स्वच्छता को बढ़ावा

समाज में ऐसे सुधार लाने की आवश्यकता है, जिनके द्वारा स्वास्थ्य सेवाएं न केवल टीकाकरण और स्वच्छता को बढ़ावा दें, वरन जन मानस को संतुलित आहार, स्वस्थ जीवन शैली और नैतिक मूल्यों की भी शिक्षा भी प्रदान करें। यदि हमारे मन में शान्ति, प्रेम, अहिंसा के भाव होंगे तथा हम अमीरी के भड़कीले दिखावे से दूर रहेंगे, तो वास्तव में हमारा जीवन रोगमुक्त हो सकेगा। स्वस्थ रहने के लिए प्रसन्न रहना आवश्यक है और प्रसन्नता तभी मिलेगी, जब हम द्वेष के स्थान पर आनंद बांटे, तभी गांव-गांव और शहर- शहर में एक स्वस्थ और खुशहाल वातावरण बन पाएगा।

ईंधन बचत का संदेश देने एक बस में निकले कलेक्टर और अधिकारी, रात्रि चौपाल के लिए दलपतपुरा रवाना

नीमच (SSS)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव द्वारा दिए गए ईंधन बचत और ऊर्जा संरक्षण के संदेश को जमीन पर उतारते हुए जिला प्रशासन नीमच ने सोमवार को एक अनूठी पहल की। कलेक्टर हिमांशु चंद्रा के नेतृत्व में जिले के सभी वरिष्ठ अधिकारी एक ही यात्री बस में सवार होकर तहसील जीरन के ग्राम दलपतपुरा में आयोजित रात्रि चौपाल के लिए रवाना हुए।

कलेक्ट्रेट परिसर से रवाना हुई इस बस को कलेक्टर हिमांशु चंद्रा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान जिला पंचायत सीईओ अमन वैष्णव, वन मंडल अधिकारी एसके अटोदे, एडीएम बीएस कलेश सहित विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी मौजूद रहे। सभी अधिकारी अलग-अलग सरकारी वाहनों के बजाय एक ही बस से गांव पहुंचे और रात्रि चौपाल के बाद इसी बस से वापस जिला मुख्यालय लौटेंगे।

कलेक्टर श्री चंद्रा ने बताया कि शासन द्वारा दिए गए ईंधन संरक्षण के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने और स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करने के उद्देश्य से यह निर्णय लिया गया है। उन्होंने कहा कि अलग-अलग वाहनों के उपयोग की बजाय सामूहिक यात्रा करने से पेट्रोल-डीजल की बचत होगी, साथ ही पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी आमजन तक पहुंचेगा।

जिला प्रशासन की इस पहल को आम लोगों ने भी सराहा। अधिकारियों का मानना है कि यदि शासकीय स्तर पर इस प्रकार के प्रयास लगातार किए जाएं तो ईंधन की खपत में कमी लाने के साथ-साथ शासकीय व्यय को भी कम किया जा सकता है। रात्रि चौपाल में कलेक्टर एवं जिला अधिकारी ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनेंगे और मौके पर ही निराकरण करने का प्रयास करेंगे। प्रशासन की यह पहल प्रधानमंत्री के "ऊर्जा संरक्षण-राष्ट्र निर्माण" के संकल्प को मजबूती देने वाली मानी जा रही है।

शौचालय निर्माण के नाम पर 1 लाख की रिश्वत लेते अफसर गिरफ्तार

धार । मध्य प्रदेश में लगातार भ्रष्ट अधिकारीयों और कर्मचारियों के खिलाफ लोकायुक्त की टीम तेजी से कार्रवाई कर रही है। आए दिन राज्य के विभिन्न जिलों एवं क्षेत्रों से रिश्वत लेते अधिकारी-कर्मचारीयों को रंगे हाथ पकड़े जाने के मामले सामने आ रहे है लेकिन बावजूद इसके घूसखोरी पर लगाम लगती दिख नहीं रही है। ताजा मामला मध्यप्रदेश के धार जिले से सामने आया है जहां इंदौर लोकायुक्त ने जिला परियोजना समन्वयक को रिश्वत लेते रंगे हाथ पकड़ा।

शौचालय निर्माण कार्य के लिए मांगे 1 लाख रुपए - धार में प्रभारी सहायक यंत्री दिलीप साधव की शिकायत पर लोकायुक्त इंदौर ने किया ट्रैप ऑपरेशन किया। दिलीप ने अपनी शिकायत में बताया कि वह समग्र शिक्षा अभियान के तहत 122 शौचालय निर्माण कार्य के पूर्णता प्रमाण पत्र जारी करवाने के लिए धार सर्किट हाउस में जिला परियोजना समन्वयक प्रदीप खरे से मिला। यहां खरे ने प्रमाण पत्र जारी करने के लिए उनसे करीब 17 लाख रूपए कमीशन के रूप में मांगे। शिकायतकर्ता ने बताया कि खरे ने उनसे 3.42 करोड़ के निर्माण कार्य में 5% कमीशन के रूप में 17 लाख रुपये की मांग की।

अनैतिक कमाई का धन अंत में डॉक्टर या पुलिस के पास पहुंचता है : पं. कमल किशोर नागर

रतनगढ़। बरेखन गौशाला में आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में सोमवार को श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। कथा के दौरान मालवा के प्रसिद्ध कथा वाचक कमल किशोर नागर ने धर्म, भक्ति, संयम और सदाचार पर आधारित प्रेरणादायक प्रसंगों के माध्यम से श्रद्धालुओं को जीवनोपयोगी संदेश दिए। कथा स्थल पूरी तरह भक्तिमय वातावरण में रंगा नजर आया।

प्रवचन के दौरान पंडित नागर ने कहा कि मनुष्य के भीतर आत्मा का भाव जागृत होना अत्यंत आवश्यक है। जब आत्मा भजन, संगीत और भगवान के स्मरण में लग जाती है, तब मनुष्य का जीवन सकारात्मक दिशा में बदलने लगता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे मावा में शक्कर मिलाने से मिठास आ जाती है, उसी प्रकार भक्ति और संस्कार जीवन को मधुर बना देते हैं।

उन्होंने कहा कि आज का मनुष्य भौतिक सुख-सुविधाओं की दौड़ में उलझकर भक्ति और पुण्य के मार्ग से दूर होता जा रहा है, जबकि जीवन का सबसे बड़ा धन पुण्य होता है, जो मृत्यु के बाद भी मनुष्य के साथ जाता है। उन्होंने अधिक मास का महत्व बताते हुए कहा कि इस अवधि में किए गए जप, तप, दान और भक्ति का विशेष फल मिलता है, लेकिन उसका प्रभाव तभी दिखाई देता है जब श्रद्धा, शुद्ध मन और शुद्ध वाणी के साथ भगवान का स्मरण किया जाए।

वाणी पर संयम रखने की सीख देते हुए पंडित नागर ने कहा कि "कड़वा सुन लेना, लेकिन कड़वा मत बोलना।" उन्होंने कहा कि मनुष्य को कभी किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि एक ही वाणी सम्मान भी दिला सकती है और रिश्तों में दूरी भी पैदा कर सकती है। यदि शब्द शुद्ध होंगे तो व्यवहार भी श्रेष्ठ होगा और जीवन में शांति बनी रहेगी।

संतोष के महत्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य को जो मिला है उसी में संतुष्ट रहना सीखना चाहिए। अत्यधिक इच्छाएं और भौतिक लालसाएं तनाव बढ़ाती हैं, जबकि संतोष और सादगी जीवन में सुख और शांति लाते हैं। उन्होंने कहा कि भगवान से यही प्रार्थना करनी चाहिए कि किसी गरीब को बीमारी न आए और यदि कोई बीमार हो जाए तो वह शीघ्र स्वस्थ हो जाए।

कथा के दौरान उन्होंने एक महत्वपूर्ण संदेश देते हुए कहा कि अनैतिक तरीके से कमाया गया धन अंततः डॉक्टर और पुलिस के पास ही पहुंचता है, क्योंकि गलत तरीके से अर्जित संपत्ति मनुष्य के जीवन में विवाद, तनाव और बीमारियां लेकर आती है। इसलिए व्यक्ति को सदैव ईमानदारी, नीति और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए। पूरे पंडाल में "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" के मंत्रोच्चार से भक्तिमय वातावरण बना रहा। आयोजन समिति ने बताया कि श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन 23 मई तक प्रतिदिन जारी रहेगा। कथा में बाल संत गोविंद ने भी व्यासपीठ से श्रद्धालुओं को संबोधित किया।

इस दौरान जावद क्षेत्र के विधायक ओमप्रकाश सकलेचा ने कथा स्थल पहुंचकर व्यासपीठ को नमन किया। कार्यक्रम में यजमान हिम्मत सिंह भरंग यादव एवं शंभू दयाल शर्मा परिवार द्वारा कथा श्रोताओं का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

कंटेनर-टेम्पो की भिड़ंत में 12 लोगों की मौत, 4 गंभीर घायल

मुम्बई । महाराष्ट्र के पालघर जिले से एक बेहद दुखद और रोंगटे खड़े कर देने वाली खबर सामने आ रही है। यहां मुंबई-अहमदाबाद राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक टेम्पो और कंटेनर ट्रक के बीच हुई भीषण टक्कर में कम से कम 12 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई है, जबकि 20 से 25 अन्य लोग गंभीर रूप से घायल बताए जा रहे हैं। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, दुर्घटना इतनी जबरदस्त थी कि दोनों वाहनों के परखच्चे उड़ गए। चीख-पुकार सुनकर स्थानीय लोग और हाईवे पुलिस तुरंत मौके पर पहुंचे, जिसके बाद राहत और बचाव कार्य शुरू किया गया। घायल हुए लोगों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां उनकी हालत चिंताजनक बनी हुई है। मृतकों की शिनाख्त और हादसे के सटीक कारणों का पता लगाने में पुलिस जुटी हुई है।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुदित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।